IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 4, December 2025
Impact Factor: 7.67

हस्तकला के अप्रतिम प्रतिमान : विन्ध्य में निर्मित सुपाड़ी स्थापत्य

अंजली सोनी

शोधार्थी, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, (म.प्र.)

डॉ. सुधा सोनी

प्राध्यापक इतिहास विभाग

शास. कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

शोध सारांश :

हस्तशिल्प मानव सभ्यता के विकास की विभिन्न कहानियों को अपने में सुदीर्घ फलक में समेटे हुए है। मानव जब से रचनात्मक कार्यों की ओर अग्रसर हुआ तभी से उसे जीव–जगत में एक नई पहचान मिली और वह प्रकृति के जीवों में श्रेष्ठ होने का गौरव हासिल किया। यह उपलब्धि मानव द्वारा निर्मित हस्तशिल्प कला से उद्‌भूत हुआ है। मानव ने पहले आवास बनाया फिर वस्त्र बनाये फिर अपने मनोरंजन हेतु विभिन्न प्रकार के यंत्रों का निर्माण किया और अपनी कल्पना शक्ति को भूमि से विस्तारित कर आकाश तक पहुंचाया। अद्‌भुत शिल्प मानव के हाथों से आकार पा करके मानव में ब्रह्म शक्ति का विस्तार किया। विभिन्न प्रकार की पुरा निर्मित वस्तुएं विन्ध्य के विभिन्न अंचलों में आज भी आदिमशिल्प को समेटे हुए है। बात शैल चित्र की करें या विविध क्षेत्रों में संरक्षित खण्डित मूर्तियाँ प्रस्तरखण्ड तथा दैनिक उपभोग की वस्तुओं के अवशेष सब कुछ मिलते हैं। समय अन्तराल बाद कला संस्कृति के विविध प्रतिमान भी विन्ध्य की विराट धरा में मिलते हैं। यह वही भू–भाग है जहाँ तानसेन के संगीत यंत्र, बैजू बावरा के ताल वाद्‌य तथा सुपाड़ी से निर्मित अप्रतिम सौन्दर्य बोध कराते विविध प्रकार के देवी–देवताओं के मनोहारी स्वरूपों का दर्शन आज भी देखने को मिलता है। विन्ध्य के केन्द्रीय नगर रीवा में आने वाले सुदूर के अतिथियों को यहाँ पहचान के रूप में सुपाड़ी से निर्मित आकर्षक और दिव्य मूर्तियाँ भेंट की जाती हैं जिसे पाकर उच्चकलाविद्, व्यक्तित्व गौरव की अनुभूति करते हैं। इन्हीं बिन्दुओं को केन्द्र में रखते हुए इस अंचल में सुपाड़ी स्थापत्य के विकास के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालने का एक प्रयास है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

DOI: 10.48175/IJARSCT-30598